International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 02-02-2025, Accepted: 02-03-2025, Published: 19-03-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 1-2

हिंदी भाषा वर्त्तमान दशा और दिशा

डॉ. रम्या पी. आर.
सहायक आचार्या, भारतीय भाषा विभाग, गुरुवायूर परिसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय, त्रिशूर, केरल, भारत

सारांश
हिंदी भाषा विश्व की सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषाओँ में तीसरी स्थान पर है। हिंदी पूरे भारत के जनमानस में समाई हुई भाषा है। भारत में सबसे अधिक बोली जानेवाली एवं समझी जानेवाली भाषाओँ में हिंदी सबसे आगे है। आज यह भाषा पूरे विश्व की भाषा बनने की होड़ में है। भाषा एक माध्यम है जो एक दूसरे से जुड़ने एवं संपर्क बनाने में समर्थ होती है। हिंदी भाषा में यह सामर्थ्य है जिसमें पूरे भारत तथा विश्व की वाणी बनने की क्षमता है। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में हिंदी भाषा की पहुँच बढ़ गई है और प्रौद्योगिकी की संभवनाओं को अपनाते हुए उत्तरोत्तर विकास की ओर यह भाषा अग्रसर है।

मूल शब्दः प्रौद्योगिकी, व्यावहारिक हिंदी, सांस्कृतिक, राजभाषा, विश्व भाषा

विश्लेषण

भाषा एक ऐसा माध्यम है जो अनेक रूपता में भी क्षेत्र देश कलानुसार एकरूपता को अपनाकर भावों ,विचारों,एवं अभिव्यक्ति का साधन बनती है। यह मौखिक रूप में हो सकता है और लिखित रूप में भी। पूरे विश्व में जितनी भी क्रियाकलाप होती हैं वे भाषा के माध्यम से होती हैं। भाषा एक क्षेत्र की, राज्य की, राष्ट्र की वाणी है और उस वाणी में उसकी समस्त खूबियाँ समावेशित हैं और उसमें प्राण का संचार भी करती है। किसी भी भाषा का प्रयोग चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न हो जितना उसका उपयोग होता है उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ती है। वह जीवंत बनी रहती है। परिवर्तन और परिवर्द्धन की मांग की पूर्ती करते हुए आगे बढ़ती रहती है। दुनिया में कई भाषाएँ ऐसी हैं जो इस रास्ते पर चलते हुए उस देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यवहारिक आवश्यकाताओं की निवृत्ति में खुद को ढलने में सफल हुई हैं।

संस्कृत वांग्मय से ही भारत देश का पूरे विश्व में परिचय हुआ था। मानवत्व को देवत्व की ओर पहुँचाने का मूलमंत्र बतानेवाले हमारे प्राचीन साहित्य और संस्कृति इसी भाषा में ही सुरक्षित है। हिंदी भाषा उसी भाषा की पुत्री है। हिंदी का व्याकरण , शब्द सम्पदा और कुछ हद तक साहित्य संस्कृत साहित्य से गृहीत है। खड़ीबोली हिंदी ने पिछले एक सौ पच्चीस साल में जो विकास किया है वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। विकास क्रम की दृष्टी से संस्कृत भाषा से होकर पाली प्राकृत, अपभ्रंश, और विभिन्न अपभ्रंशों से गुज़र कर उसकी विभिन्न बोलियों से समन्वित होकर आज जिस रूप में यह हमारे सम्मुख है वह निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया से होकर उपस्थित हुआ है।

विश्व भाषा के परिप्रेक्ष्य में हिंदी

विश्व भाषा उसी भाषा को कहा जाता है जो विश्व के अधिकाधिक देशों में पढी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती है। यह वह भाषा होती है जो भौगोलिक रूप से व्यापक होती है और विभिन्न भाषा समुदायों के बीच संवाद को आसान बना देती है। यह वह भाषा होती है जो पूरे विश्व को अपने में शामिल करती है। अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनी, जर्मन, पुर्तुगाली, डच, रूसी, चीनी, अरबी भाषाओँ का वर्चास्व पूरे विश्व में अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक है। इनमें से अंग्रेजी , फ्रेंच, स्पेनी, पुर्तुगली, डच भाषाओँ का वैश्विक वर्चस्व का एक कारण उनका औपनिवेशिक वर्चस्व से स्थापित हुआ है। चीनी, रूसी, भाषाओँ का वर्चस्व उनके राजनैतिक, आर्थिक प्रभाव (पूरे विश्व में) से मिला है। अरबी भाषा का विश्व स्तर पर मान्यता उनकी आर्थिक सम्पन्नता जिनके चलते दूसरे देशों में उनका सम्बन्ध जुडा हुआ है उनसे प्राप्त है। जर्मन भाषा का महत्व तो यूरोपीय संघ में अंग्रेजी के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा है। इस देश की अर्थ व्यवस्था काफी मजबूत है। बड़ी–बड़ी कंपनियां इस देश में व्यापार करती हैं। कई शीर्ष विद्यालय एवं शोध केंद्र हैं, भाषा के क्षेत्र में बहुत अधिक शोध कार्य यहाँ संपन्न हो रहा है खासकर संस्कृत को लेकर बहुत शोध कार्य यहाँ चल रहा है। विश्व भाषा रिपोर्ट आंकड़ों के अनुसार विश्व में हिंदी बोलनेवालों की संख्या के प्रतिशत दिन–ब दिन बढ़ती जा रही है। माउरीशस ,फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिनादएवंटोबेगा, बहरीन, बांग्लादेश, म्यानमार, नेपाल, ओमान, खत्तर, सौदी अरबिया, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, केन्या, इंडोनेशिया, मलेशिया, यूनायिटेडअरब, भूटान, पेरू, यमन, पाकिस्तान, अर्मेनिया, श्रीलंका, कजकिस्थान, रूस, जापान आदी कई देशों में हिंदी का प्रभाव बढ़ता जा है। साल २०२५ का विश्व हिंदी सम्मलेन जापान में संपन्न हुआ था।

'हिंदी अब विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली तीसरी भाषा बन गई है। संसार में हिंदी बोलने समझनेवालों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में जा बसे लोगों में 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई देशों में हिंदी की विशिष्ट भूमिका है। एशियाई भाषाओँ में से हिंदी को एशिया की प्रतिनिधि भाषा के रूप में देख सकता है। राकेश शर्मा निशीथ के लेखन के अनुसार वैश्वीकरण के दौर में हिंदी विश्व की एक सौ दस भाषाओं में से जीवित रहनेवाली एक भाषा होगी। इसका एक राजनैतिक पक्ष भी है। हिंदी का महत्व इसलिए बढेगा कि भारत व्यवसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश बनता जा रहा है और उसके साथ हिंदी को भी अपना वर्चस्व बनाये रखना है।

हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ फिजी की भी राजभाषा है। त्रिनिनाद, गुयाना, सूरीनाम में इसे क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। विदेशों में भी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अब हिंदी पढ़ाई जाती है। तकनीकी के क्षेत्र में भी हिंदी का उपयोग बढ़ता जा रहा है। गूगल में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ आज उपलब्ध हैं। आजकल हिंदी में वेबसाईट की व्यवस्था भी की गई है। हिंदी में आज बहुत सारे सॉफ्टवेयर भी उपलब्ध हैं।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में हिंदी की स्थिति

वैश्वीकरण के चलते हिंदी बाज़ार की भाषा बन गई है। पत्रकारिता, मीडिया, आदी के क्षेत्र में हिंदी का खूब प्रचार हो रहा है। शिक्षा, कार्यालय कानून, स्वास्थ्य, रेलवे, बैंकिंग, मीडिया सभी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग होने लगा है इसके लिए अलग से पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग एवं नए–नए शब्दों का निर्माण का कार्य भी हो रहा है। हिंदी फिल्मों से भी हिंदी का बहुत प्रचार देश – विदेश में हो रहा है। वैश्वीकरण के दौर में समाचार पत्र–पत्रिकाओं से हिंदी देश–विदेश के कोने–कोने में पहुँच रही है। दैनिक भारत, हंस, आलोचना, संचेतना, नया ज्ञानोदय, रंगमंच, कथादेश, वागर्थ और अनेक ऑनलाइन हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भारत में और विश्वा, विज्ञान पत्रिका, विश्व हिंदी समाचार, इन्टरनेट पत्रिका आदि के माध्यम से विदेशों में भी हिंदी का खूब प्रचार – प्रसार हो रहा है। बी.बी.सी. हिंदी द्वारा रेडियो, टेलीविज़न और यूतुब के माध्यम से हिंदी कार्यक्रम लोगों तक पहुँच रहा है। हिंदी में पॉडकास्ट,वीडियो,ऑडियो भी आजकल बहुत प्रचलित है।

कंप्यूटर के युग में हिंदी कंप्यूटर की भाषा बन गई है। माइक्रोसोफ्ट कंपनी ने एम.एस. ऑफिस का हिंदी रूपांतरण किया है। यूनीकोड (हिंदी)के प्रयोग से विश्व की सभी वेबसाइटों में हिंदी आज उपलब्ध है।

हिंदी साहित्य और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

किसी भी भाषा का साहित्य उस भाषा का सबसे सुरक्षित एवं प्रचलित रूप होता है। हिंदी भाषा हिंदी साहित्य का सबसे प्रमुख प्रयुक्ति है। हिंदी भाषा साहित्य ने अपनी समकालीन समस्त संभावनाओं के साथ मनुष्य, समाज और उनकी परिवेशों की अभिव्यक्ति देने में लगी हुई है। हिंदी भाषा–साहित्य देश की विभिन्न प्रांतीय भाषाओँ से शब्द ग्रहण कर रहा है उसके साथ–साथ यूरोपीय भाषाओँ से भी शब्द ग्रहण कर रहा है ताकि पूरे विश्व की वाणी बन सके। हिंदी साहित्य विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को देश–विदेशों में पहुंचाता है। आजकल अनुवाद साहित्य बहुत जोर पकड़ रहा है। हिंदी की कई रचनाओं का अनुवाद विदेशी भाषाओँ में हो रहा है। साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो एशिया के देशों में सर्वाधिक पाठक हिंदी साहित्य की है। कहानी, कविता , नाटक, संस्मरण , आत्मकथा एवं ज्ञान – विज्ञान की सबसे ज्यादा किताबें हिंदी भाषा में छपती हैं। चुनौती यह होगी कि हिंदी के पाठक वर्ग को जीवित कैसे रखा जायें। यह चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।

विदेशी राष्ट्रों में कहीं–कहीं हिंदी वहां की मातृभाषा द्वारा सिखाई जाती है। संतोष कुमारी अरोडाजी जो अर्मेनिया में हिंदी अध्यापिका के रूप में पिछले बीस– पच्चीस सालों से कार्य कर रही है, वे वहां के बच्चों को आर्मेनियन भाषा में हिंदी सिखा रही हैं। २०२५ दिसम्बर में केरल के तृशूर जिले में हुए दक्षिण भारतीय हिंदी साहित्य सम्मलेन में अपना यह अनुभव वे साझा कर रही थीं। विश्व के कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्व विद्यालयों में आज हिंदी का अध्ययन अध्यापन कार्य चल रहा है। सन २०२४ मार्च में कजाखिस्थान और भारत सरकार के तत्वावधान में कजाखिस्थान में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मलेन का आयोजन हुआ था। केरल के कोचिन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की वरिष्ठ आचार्या डॉ. के. अजिता इसमें केरल का प्रतिनिधित्व किया था। पूरे देश में भी हिंदी का प्रचार प्रसार बढ़ता जा रहा है। सम्प्रति हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की गैर कारिकआध भाषाओं की सूची में सम्मिलित किया गया है।

निष्कर्ष

वर्त्तमान सन्दर्भ में हिंदी की स्थिति और भविष्य काफी महत्वपूर्ण हो गई है। हर साल 10, जनवरी विश्व हिंदी दिवस के रूप में विश्व भर में कई कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है। वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रचार–प्रसार करना इसका उदेश्य है। हिंदी मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनभाषा और साहित्य भाषा के रूप में पूरे भारत में समादृत है। तकनीकी की दृष्टी से भी इस भाषा का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है आगे भविष्य में विश्व भाषा के रूप में भी इसको प्रतिष्ठा मिलने की संभावना भी है। हिंदी आज संयुक्त राष्ट्र संघ की गैरआधिकारिक भाषाओं की सूची में भी सम्मिलित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://www-ethnologue-com/insights/eth
   https://hi-wikipedia-org/wiki/हिंदी
2. https://rajbhasha-gov-in/sites/default/files/lekh2nd&hin-pdf
   "विश्व भाषा की ओर हिंदी का बढ़ते कदम"–राकेश शर्मा निशीथ राजभाषा विभाग ,नयी दिल्ली
3. https://news-un-org/hi/story/2025/02/1082851 विश्व हिन्दी दिवस: वैश्विक भाषाई कुंजी के रूप में हिन्दी की महत्ता का जश्न–डीजीसी की प्रमुख मैलिसा फ़्लेमिंग – हिन्दी की वैश्विक भाषाई महत्ता.
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेन्द्र ,डॉ. हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, तीसरा संस्करण प्र.व. २०११.
5. हिंदी भाषा साहित्य और संस्कृति–सं. प्रो. के. के. वेलायुधन, प्रो. वी. जी. गोपालकृष्णन, दक्षिण भारतीय हिंदी साहित्य सम्मलेन , त्रिशूर, केरल, प्र. व, २०१८
6. भूमंडलीकरण और उत्तर सांस्कृतिक विमर्श – सुधीश पचौरी